चतुर्दशः पाठः

बोधगया

(मिश्रित व्याकरण)

[बौद्धधर्म अन्तरराष्ट्रीय स्थिति के कारण महत्त्वपूर्ण है । इस धर्म के अनुयायी बोधगया को भगवान् बुद्ध की ज्ञानस्थली के कारण बहुत आदर की दृष्टि से देखते हैं तथा यहाँ की यात्रा को अपने जीवन का परम लक्ष्य मानते हैं । बोधगया में भगवान बुद्ध का प्रायः चौदह सौ वर्ष पुराना मन्दिर तथा बोधिवृक्ष वर्तमान है । प्रस्तुत पाठ में बोधगया के धार्मिक महत्त्व तथा वर्तमान परिवेश का संक्षिप्त परिचय है ।]

विहारराज्यस्य गयामण्डले अवस्थितः बोधगया नाम ग्रामः अद्य महतीं प्रसिद्धिं प्राप्नोति । अत्र राजकुमारः सिद्धार्थः वैशाख-पूर्णिमायां बोधिं प्राप्तवान् । ततः परं सः भगवान् बुद्धः इति प्रसिद्धः । बौद्धधर्मस्य सर्वे उपासकाः बोधगयां प्रति श्रद्धां धारयन्ति । अद्य तत्र प्राचीनः अश्वत्थवृक्षः वर्तते । तस्यैव छायायां बुद्धः तपस्यां कृतवान्। तस्य वृक्षस्य समीपमेव बुद्धस्य प्राचीनं महाबोधि-

मन्दिरं वर्तते। मन्दिरे पद्मासने उपविष्टस्य बुद्धस्य पाषाणमूर्तिः वर्तते । प्रतिदिनं सहस्राधिकाः भक्ताः तस्य दर्शनाय आयान्ति ।

तस्य मन्दिरस्य परिसरः शान्तिमयः करुणायुक्तश्च वर्तते । बोधगयायां सम्प्रति विभिन्नानां देशानां निवासिभिः कृतानि बुद्धमन्दिराणि शोभन्ते। यथा—म्याँमार (बर्मा)-मन्दिरम् थाईमन्दिरम्, तिब्बतमन्दिरम्, जापानमन्दिरम् इत्यादि । तत्रैव मगधविश्वविद्यालयस्य मुख्यपरिसरः विशालः वर्तते। अधुना बोधगया रमणीयं दर्शनीयं स्थलम् । सम्पूर्णस्य परिसरस्य स्वच्छता परिवहनव्यवस्था च रमणीया वर्तते । वर्षं यावत् पर्यटकाः बोधगयां गत्वा आत्मानं धन्यं मन्यन्ते । अत्र निरञ्जना नाम नदी पार्श्वे प्रवहति । ग्रीष्मकाले सा शुष्यति । प्रशासनं बोधगयायाः विकासाय निरन्तरं प्रयासं करोति । वयमपि तत्र गत्वा परिसरस्य भ्रमणं कुर्याम ।

शब्दार्थः

बिहारराज्यस्य	=	बिहार राज्य के
गयामण्डले	=	गया में
अवस्थितः	=	स्थित
महतीम्	=	बड़ी (को)
बोधिम्	=	ज्ञान को
प्राप्तवान्	=	प्राप्त किया
ततःपरम्	=	उसके बाद
धारयन्ति	=	धारण करते हैं/करती हैं
अश्वत्थवृक्षः	=	पीपल का पेड़
तस्यैव (तस्य + एव)	=	उसका ही/उसी का
छायायाम्	=	छाया में
कृतवान्	=	किया
तस्मिन्	=	उसमें

पद्मासने	=	कमलासन / पद्मासन की अवस्था में
उपविष्टस्य	=	बैठे हुए का / की
पाषाणमूर्तिः	=	पत्थर की मूर्ति
सहस्राधिकाः	=	हजार से अधिक
दर्शनाय	=	दर्शन के लिए
आयान्ति	=	आते हैं
परिसरः	=	आहाता, स्थान
करुणा	=	दया
सम्प्रति	=	इस समय
निवासिभिः	=	निवासियों के द्वारा
कृतानि	=	बनाये गये
शोभन्ते	=	शोभते हैं
तत्रैव (तत्र+एव)	=	वहीं
अधुना	=	आजकल
रमणीयम्	=	सुन्दर, मनमोहक
दर्शनीयम्	=	दर्शन योग्य
स्थलम्	=	जगह
स्वच्छता	=	सफाई
वर्ष यावत्	=	सालों भर / पूरे साल
पर्यटकाः	=	यात्री
आत्मानम्	=	अपने आप को
मन्यन्ते	=	मानते हैं / समझते हैं

पार्श्वे	=	बगल में
प्रवहति	=	बहती है
शुष्यति	=	सूख जाती / जाता है
विकासाय	=	विकास के लिए / विकास को
भ्रमणम्	=	घूमना / घूमने का कार्य
परिसरस्य	=	आहाते का
कुर्याम	=	(हम) करें

व्याकरणम्

सन्धिविच्छेद:

तस्यैव = तस्य + एव (वृद्धिसन्धि:, स्वरसन्धि:)

पद्मासने = पद्म + आसने (दीर्घसन्धि:, स्वरसन्धि:)

करुणायुक्तश्च = करुणायुक्त: + च (विसर्गसन्धि:)

सहस्राधिका: = सहस्र + अधिका: (दीर्घसन्धि:, स्वरसन्धि:)

प्रकृति-प्रत्यय विभाग:-

प्राप्नोति = प्र + √आप् , लट्लकार:, प्रथमपुरुष:, एकवचनम्

प्राप्तवान् = प्र + √आप् + क्तवतु (पुं.)

धारयन्ति = √धृ + णिच्, लट्लकार:, प्रथमपुरुष:, एकवचनम् ,

वर्तते = √वृत् , लट्लकार:, प्रथमपुरुष:, एकवचनम्

आयान्ति = आ + √या , लट्लकार:, प्रथमपुरुष:, बहुवचनम्

शोभन्ते = √शुभ् , लट्लकार:, प्रथमपुरुष:, बहुवचनम्

करोति = √कृ , लट्लकार:, प्रथमपुरुष:, एकवचनम्

कुर्याम = √कृ, विधिलिङ्लकार:, उत्तमपुरुष:, बहुवचनम्

अभ्यासः

मौखिकः

1. अधोलिखितानां पदानाम् उच्चारणं कुरुत-

प्रसिद्धिम्, श्रद्धाम्, अश्वत्थवृक्षः, सहस्राधिकाः, निरञ्जना, शुष्यति, भ्रमणम् ।

2. अधोलिखितानां पदानाम् अर्थं वदत -

अवस्थितः, अद्य, ततःपरम्, उपविष्टस्य, सम्प्रति, अधुना

लिखितः

3. निम्नलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरम् एकेन पदेन लिखत -

(क) बोधगया कस्मिन् मण्डले अस्ति ?

(ख) सिद्धार्थः कदा बोधिं प्राप्तवान् ?

(ग) कस्य छायायां बुद्धः तपस्यां कृतवान् ?

(घ) मन्दिरे बुद्धस्य पाषाणमूर्तिः कस्मिन् आसने वर्तते ?

(ङ) बोधगयापार्श्वे का नदी प्रवहति ?

4. कोष्ठात् उचितरूपं चित्वा रिक्तस्थानं पूरयत-

(क) विहारराज्यस्य .... मण्डले बोधगया अस्ति । (गया-, नवादा-)

(ख) सिद्धार्थः .... पूर्णिमायां बोधिं प्राप्तवान् । (आषाढ-, वैशाख-)

(ग) बोधगयायां प्राचीनः .... वृक्षः वर्तते । (वट-, अश्वत्थ-)

(घ) बुद्धस्य पाषाणमूर्तिः .... आसने वर्तते । (पद्म-, सिंह-)

(ङ) मगधविश्वविद्यालयस्य मुख्यपरिसरः .... वर्तते । (गयायाम्, बोधगयायाम्)

लिखितः

5. **निम्नलिखितानां शब्दानां प्रयोगेण संस्कृते वाक्यानि रचयत ।**

बोधगया, अद्य, पाषाणमूर्तिः, भक्तः, प्रशासनम् ।

6. **अर्थानुसारेण पदानि सुमेलयत**

	पद		अर्थ
(क)	अद्य	–	इस समय
(ख)	सम्प्रति	–	आज
(ग)	अत्र	–	वहाँ
(घ)	तत्र	–	यहाँ
(ङ)	रमणीयम्	–	देखने योग्य
(च)	दर्शनीयम्	–	मनमोहक

7. **रिक्तस्थानानि पूरयत -**

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
(क)	ग्रामः	....	....
(ख)	उपासकः	उपासकौ	....
(ग)	धारयति	धारयतः	....
(घ)	करोति	....	....

8. **अधोलिखितानां पदानां सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत -**

(क) तस्य + एव = ...

(ख) पद्म + आसने= ....

(ग) सहस्राधिकाः = ...

(घ) करुणायुक्तश्च = ...

(ङ) तत्रैव = ...

७. एतेषु किं सत्यम् अथवा असत्यम् लिखत -

(क) बोधगया विहारस्य गयामण्डले अस्ति ।

(ख) राजकुमारः सिद्धार्थः आषाढपूर्णिमायां बोधिं प्राप्तवान् ।

(ग) अश्वत्थवृक्षस्य समीपमेव बुद्धस्य प्राचीनं महाबोधिमन्दिरं वर्तते ।

(घ) बुद्धः वटवृक्षस्य छायायां तपस्यां कृतवान्

(ङ) बोधगयायां जलमन्दिरम् अस्ति ।

योग्यता-विस्तारः

बौद्ध धर्म के प्रवर्तक सिद्धार्थ कपिलवस्तु के राजा शुद्धोदन के पुत्र थे । उनक आविर्भाव-काल 563 ई० पू० से 483 ई० पू० माना गया है । आरम्भ से ही उनकी अभिरुचि वैराग्य में थी । राजा ने उनका विवाह यशोधरा से कर दिया । उन्हें राहुल नामक पुत्र भी हुअ किन्तु एक दिन अत्यधिक विरक्ति के कारण वे राजभवन छोड़कर निकल गये तथा विभिन्न स्थानों पर अपनी जिज्ञासाओं का समाधान खोजते-खोजते अंत में बोधगया पहुँचे । उस समय वह 'उरुवेला' नाम का गाँव था । कई दिनों की तपस्या के बाद एक पीपल के वृक्ष के नीचे वैशाख पूर्णिमा को सिद्धार्थ को ज्ञान (बोधि) प्राप्त हुआ । उस समय उनकी आयु 35 वर्ष की थी । बोधि प्राप्ति के बाद उन्हें 'बुद्ध' कहा गया । अपने जीवन के शेष 45 वर्षों तक बिहार और उत्तर प्रदेश के विभिन्न स्थानों में उन्होंने घूम-घूमकर धर्म का प्रचार किया । बाद में इस धर्म को राज्याश्रय मिला । अशोक ने श्रीलंका, बर्मा (म्याँमार), चम्पा (थाइलैंड) इत्यादि देशों में धर्म-प्रचारक भेजे । कालान्तर में तिब्बत, गांधार, चीन तथा जापान में भी यह धर्म पहुँच गया ।

बोधगया बुद्ध के बोधि-लाभ (निर्वाण) से सम्बद्ध होने के कारण एशियाई देशों में बहुत लोकप्रिय तथा प्रतिष्ठित है । प्रतिवर्ष लाखों यात्री यहाँ तीर्थ-यात्रा के लिए आते हैं । सभी देशों के अपने-अपने मन्दिर बने हुए हैं जिनमें बुद्ध की अत्यन्त सुन्दर और बहुमूल्य प्रतिमाएँ लगी हुई हैं ।

*****

प्रासङ्गिकं व्याकरणम्

वर्णाः

संस्कृत भाषा में वर्णमाला को दो वर्गों में रखा जाता है - 1. स्वर वर्ण तथा 2. व्यञ्जन वर्ण। जिनका उच्चारण स्वतः बिना बाधा के होता है उन्हें **स्वर** कहते हैं (स्वयं राजन्ते इति स्वराः)। जिनके उच्चारण में स्वर की सहायता ली जाती है उन्हें व्यञ्जन कहते हैं (अन्वग् भवति व्यञ्जनम्) । व्यञ्जन स्वर पर आश्रित होता है ।

स्वरों की संख्या 13 है । वे हैं- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, लृ, ए, ऐ, ओ, औ । इनमें ॠ तथा लृ का प्रयोग अत्यल्प (शून्य प्राय) होता है । स्वरों को पाणिनि ने **अच्** कहा है। अच् एक प्रत्याहार है जो निम्नलिखित चार सूत्रों के अक्षरों से बना है- अइउण्, ऋलृक्, एओङ्, ऐऔच् । अ, ए, ओ इन तीनों स्वरों को **'गुण'** कहते हैं ।

एक दूसरे प्रकार से स्वरों को ह्रस्व और दीर्घ के रूप में विभक्त किया जाता है । अ, इ, उ, ऋ, लृ - ये पाँचों ह्रस्व हैं । शेष आठों स्वर दीर्घ हैं ।

व्यञ्जनों को निम्नलिखित तीन भागों में विभक्त किया गया है -

1. स्पर्श वर्ण - क् से म् तक ।
2. अन्तःस्थ वर्ण - य्, र्, ल्, व् ।
3. ऊष्म वर्ण - श्, ष्, स्, ह् ।

सभी व्यञ्जनों को संयुक्त रूप से **'हल्'** कहा जाता है ।

स्पर्श वर्णों के उच्चारण में मुख के भीतर दो अवयव सट जाते हैं । इनके पाँच वर्ग हैं -

1. कण्ठ्य	- कवर्ग	- क्, ख्, ग्, घ्, ङ्
2. तालव्य	- चवर्ग	- च्, छ्, ज्, झ्, ञ्
3. मूर्धन्य	- टवर्ग	- ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्
4. दन्त्य	- तवर्ग	- त्, थ्, द्, ध्, न्
5. ओष्ठ्य	- पवर्ग	- प्, फ्, ब्, भ्, म्

उच्चारण-स्थानानि

स्वर हो या व्यञ्जन - सबका उच्चारण मुँह के भीतर कण्ठ से ओठ के बीच कहीं न कहीं पर होता है । इन्हें 'उच्चारण स्थान' कहते हैं । इन स्थानों से टकराती हुई प्राणवायु ध्वनियों का उत्पादन करती है । निम्नलिखित सूत्रों से इन उच्चारण-स्थानों को तथा उनसे सम्बद्ध वर्णों को सरलता से स्मरण रखा जा सकता है -

1. **अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः** - अ, आ, कवर्ग (क्, ख्, ग्, घ्, ङ्) ह् तथा विसर्ग का उच्चारण स्थान कण्ठ है । इसलिए इन वर्णों को **कण्ठ्य** (guttural) वर्ण कहते हैं ।
2. **इचुयशानां तालु** - इ, ई, चवर्ग (च्, छ्, ज्, झ्, ञ्), य् तथा श् का उच्चारण स्थान तालु है। इसलिए इन वर्णों को **तालव्य** (palatal) वर्ण कहते हैं ।
3. **ऋटुरषाणां मूर्धा** - ऋ (ह्रस्व या दीर्घ), टवर्ग (ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्), र् और ष् का उच्चारण -स्थान मूर्धा है । इसलिए इन्हें **मूर्धन्य** (cerebral) वर्ण कहते हैं ।
4. **लृतुलसानां दन्ताः** - लृ, तवर्ग (त्, थ्, द्, ध्, न्) ल् तथा स् का उच्चारण दाँत से होता है। इसलिए इन्हें **दन्त्य** (dental) वर्ण कहते हैं ।
5. **उपूपध्मानीयानामोष्ठौ** - उ, ऊ, पवर्ग (प्, फ्, ब्, भ्, म्) तथा उपध्मानीय (प्, फ् के पहले विसर्ग जैसा उच्चारण) का उच्चारण दोनों ओठों के स्पर्श से होता है । इसलिए इन्हें **ओष्ठ्य** (labial) वर्ण कहते हैं ।
6. **ञमङणनानां नासिका च** - वर्गों के (कवर्ग, चवर्ग आदि के) अन्तिम वर्ण के उच्चारण में कण्ठ आदि के अतिरिक्त नासिका (नाक) का भी उपयोग होता है । इसलिए ङ्, ञ्, ण्, न्, म् - इन वर्णों को **अनुनासिक** (nasal) भी कहते हैं ।
7. **एदैतोः कण्ठतालु** - ए, ऐ इन दोनों का उच्चारण स्थान कण्ठ और तालु दोनों मिलकर है। इसलिए इन्हें **कण्ठतालव्य** वर्ण कहते हैं ।
8. **ओदौतोः कण्ठोष्ठम्** - ओ, औ का उच्चारण-स्थान कण्ठ और ओठ दोनों से मिलकर होता है। इसलिए इन्हें **कण्ठोष्ठ्य** वर्ण कहते हैं ।

वकारस्य दन्तोष्ठम्- व् का उच्चारण-स्थान दाँत और ओंठ दोनों मिलकर है । इसलिए इसे **दन्तोष्ठ्य** वर्ण कहते हैं ।

नासिकाऽनुस्वारस्य- अनुस्वार का उच्चारण-स्थान नासिका (नाक) है । इसलिए इसे **नासिक्य** वर्ण कहा जाता है । उच्चारण-स्थानों का महत्त्व सन्धि-प्रकरण में बहुत अधिक होता है । जैसे- अ+इ = ए । **अ** का उच्चारण-स्थान कण्ठ है, **इ** का उच्चारण-स्थान तालु है । इसलिए इन दोनों का योग ए है क्योंकि वह कण्ठतालव्य वर्ण है । इसी प्रकार यदि+अपि = यद्यपि । यहाँ **इ** के स्थान में **य्** हुआ क्योंकि इ और **य्** दोनों तालव्य हैं । इसीप्रकार अन्य सन्धियों की व्याख्या में उच्चारण-स्थान पर ध्यान दिया जाता है ।

पदानां विशेषाः

संस्कृत में व्यावहारिक दृष्टि से 'पद' (वाक्य में प्रयोग की क्षमता रखने वाले शब्द) तीन कार के है- सुबन्त, तिङन्त तथा अव्यय। **सुबन्त** सुप् विभक्तियों से युक्त होते हैं अर्थात् प्रथमा लेकर सप्तमी तक की विभक्तियाँ इनमें लगी रहती हैं । जैसे- बालकः, देवीनाम्, तेषु इत्यादि। **तिङन्त** वे पद हैं जो तिङ् प्रत्ययों से युक्त होते हैं । ये विभिन्न लकारों में काल (Tense) तथा क्रिया-दशा (Mood) का बोध कराते हैं । तिङ् प्रत्यय क्रियावाचक धातुओं से लगते हैं । जैसे- च्छति, पठतु, अलभत, गमिष्यति, पठेत् इत्यादि । **अव्यय** वे पद हैं जिनका रूप-परिवर्तन नहीं ता । जैसे- खलु, च, शनैः, प्रतिदिनम्, यथाशक्ति इत्यादि । इन तीनों प्रकार के पदों की वशेषताएँ यहाँ दिखायी जाएँगी।

1. सुबन्त - पदानि

सुबन्त का अर्थ है - सुप् + अन्त । अर्थात् जब प्रातिपदिक (धातु से भिन्न सार्थक शब्द) के साथ सुप् प्रत्यय जुड़े तो इसे 'सुबन्त' कहते हैं । सुप् प्रत्यय 21 हैं जो प्रथमा से सप्तमी तक त्येक विभक्ति में तीन-तीन वचनों के प्रत्ययों के रूप में हैं । सभी शब्द-रूपों में इन प्रत्ययों को खा जा सकता है -

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
(Case-ending)	(Singular)	(Dual)	(Plural)
प्रथमा	सु	औ	जस्
द्वितीया	अम्	औट्	शस्
तृतीया	टा	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ङे	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	ङसि	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	ङस्	ओस्	आम्
सप्तमी	ङि	ओस्	सुप्

प्रथमा के सु से आरंभ करके सप्तमी के सुप् में प् को लेकर 'सुप्' प्रत्याहार बनता है इन सभी प्रत्ययों को सुप् में रखते हैं । इन विभक्तियों के रूप विभिन्न शब्दों के सन्दर्भ में कुछ परिवर्तित होते हैं । जैसे- बालक + सु = बालकः । रमा + सु = रमा । नदी + सु = नदी मुनि + सु = मुनिः। दातृ + सु = दाता । इदम् + सु = अयम्, इयम्, इदम् । अस्मद् + सु = अहम् । बालक + ङसि = बालकात् । राजन् + ङसि = राज्ञः । इदम् + ङसि = अस्मात्, अस्याः । पितृ + ङसि = पितुः । इन रूप - परिवर्तनों के कारणों को व्याकरण के उच्चतर ग्रन्थों में समझाया गया है । प्रारंभिक छात्रों को शब्द रूप (Declension) को याद कर लेना ही उपाय है ।

लिङ्गम् (Gender) :– सुबन्त शब्दों की महत्त्वपूर्ण विशेषता लिङ्ग को लेकर है । अस्मद्, युस्मद् के रूपों को छोड़कर सभी सुबन्त रूप किसी न किसी लिङ्ग में होते हैं । संस्कृत में तीन लिङ्ग हैं - पुँल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग । ये लिङ्ग प्राकृतिक भी हैं और व्याकरणिक भी । ये शब्द के संस्कार कहे जाते हैं । इन लिङ्गों के आधार पर शब्दरूपों का विभाजन होता है । जैसे- अजन्त पुँल्लिङ्ग शब्द, अजन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द तथा अजन्त नपुंसकलिङ्ग । इसीप्रकार हलन्त पुँल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग । मानक व्याकरण ग्रन्थों में इन्हीं छह वर्गों में शब्द-रूपों को रखा जाता है । आगे कुछ शब्द-रूप दिये गये हैं ।

नम् - संख्या का निर्देश करने के लिए वचन का उपयोग होता है । संस्कृत भाषा में तीन वचन । हैं - एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन। द्विवचन के रूप बहुत कम होते हैं । जैसे - बालक द के रूप में द्विवचन के वस्तुत: तीन ही रूप है - बालकौ (प्रथमा तथा द्वितीया) बालकाभ्याम् तीया, चतुर्थी, पञ्चमी) तथा बालकयो: (षष्ठी, सप्तमी) । अन्य भाषाओं में इसका प्रयोग नहीं ा; संस्कृत में भी इसके प्रयोग कम किये जा रहे हैं । एकवचन तथा बहुवचन क्रमश: एक तथा क वस्तुओं के बोधक हैं । जैसे- पुस्तकम् (एक पुस्तक), पुस्तकानि (अनेक पुस्तकें) । अहम् वल मैं), वयम् (हम सब लोग), गौ: (एक गाय या बैल), गाव: (बहुत सी गायें या अनेक ा)। वचन का प्रयोग तिङन्त में भी होता है किन्तु उसका आधार सुबन्त ही रहता है जैसे - लका: पठन्ति, बालक: पठति । क्रिया में वचन का भेद कर्ता (सुबन्त) के भेद के कारण है। गच्छ, यूयं गच्छत । यहाँ भी तिङन्त में वचन-भेद सुबन्त के वचन-भेद के कारण है ।

भक्ति:- संख्याकारकबोधयित्री विभक्ति: । अर्थात् जो संख्या (वचन) तथा कारक (क्रिया निष्पत्ति में सहायता के रूप) का बोध कराये उसे **'विभक्ति'** कहते हैं । ऊपर 21 (7×3) भक्तियों का उल्लेख किया गया है । पहले प्रथमा, द्वितीया से लेकर सप्तमी तक सात भक्तियाँ हैं। प्रत्येक विभक्ति तीन-तीन वचनों में बँटी हुई है । विभक्ति को प्रत्यय के अन्तर्गत ते हैं। सुप् प्रत्ययों को विभक्ति कहते हैं । यदि कोई पूछे कि **राज्ञाम्** में कौन विभक्ति है तो र होगा कि राजन् शब्द से षष्ठी बहुवचन की **आम्** विभक्ति लगी है । विभक्ति के प्रयोग के यम वैयाकरणों ने बनाये हैं । सामान्य रूप से कारकों का प्रकाशन विभक्तियों से होता है से - कर्ता कारक में **प्रथमा** (बालक: पठति), कर्म कारक में **द्वितीया** (स ओदनं खादति), रण कारक में **तृतीया** (कलमेन लिखति), सम्प्रदान कारक में **चतुर्थी** (शिक्षकाय दक्षिणां ाति), अपादानकारक में **पंचमी** (वृक्षात् पत्रं पतति), संबन्ध मात्र में **षष्ठी** (बालकस्य तकम्), अधिकरण कारक में **सप्तमी** (वृक्षे फलानि सन्ति) होती है । संबोधन में प्रथमा भक्ति होती है ।

विभक्तियाँ कुछ अन्य कारणों से भी होती हैं, भले ही वहाँ कारक नहीं हो । जैसे - लकेन सह पिता आगच्छति । यहाँ 'सह' शब्द के कारण बालक में तृतीया है । **श्रीगणेशाय म:** - यहाँ **नम:** के योग में चतुर्थी विभक्ति हुई है । कारक से भिन्न, किसी शब्द के कारण

जब विभक्ति होती है तो उसे **उपपद विभक्ति** कहते हैं ।

सह और **नमः** के योग से होने वाली क्रमशः तृतीया और चतुर्थी ऐसी ही विभक्तियाँ
कारक के कारण होने वाली विभक्ति को **कारक विभक्ति** कहते हैं । जैसे- वृक्षात् पत्रं पत
यहाँ **वृक्ष** अपादान है इसीलिए पञ्चमी विभक्ति लगी है ।

कारकम् :- **'क्रियान्वयि कारकम्', 'क्रियानिष्पादकं कारकम्'** क्रिया के पूर्ण होने
जिन-जिन साधनों की आवश्यकता होती है वे साधन **कारक** कहलाते हैं । जैसे- पचति क्रि
के संपादन में पकाने वाला (कर्ता), पकाने की वस्तु (कर्म), पकाने का साधकतम उपकर
(जैसे- अग्नि, कलछी इत्यादि करण), जिसके लिए पकाया जा रहा है वह व्यक्ति (सम्प्रदान
तथा जिस बर्तन में पकाया जा रहा हो (अधिकरण) ये सब सहायक हैं । अतएव कारक हैं । इ
प्रयोग करेंगे - सूपकारः स्थाल्याम् (बटलोही में) अग्निना पण्डितेभ्यः ओदनं पचति । य
सूपकार (रसोइया) कर्ता कारक है, **स्थाली** अधिकरण कारक है । **अग्नि** करण कारक है
पण्डित सम्प्रदानकारक है। **ओदन** कर्म कारक है । यह एक सामान्य वाक्य है जिसमें कई कारक
एक साथ हैं ।

संस्कृत के विद्वानों ने छह कारक माने हैं-

कर्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च ।
अपादानाधिकरणे इत्याहुः कारकाणि षट् ॥

कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण- ये छह ही कारक माने गये हैं क्योंकि
क्रिया से इनका अन्वय (संबंध) होता है । संबंध और संबोधन को कारक नहीं माना जाता क्योंकि
क्रिया से ये सीधे जुड़े नहीं रहते । इन कारकों के प्रमुख सूत्रों को हम जान लें तो बहुत
सुविधा होगी ।

कर्ता - **स्वतन्त्रः कर्ता** । क्रिया की निष्पत्ति (सम्पादन) में जिस व्यक्ति के स्वतन्त्र रूप से लगे
हुए रहने की कल्पना की जाये उसे **कर्ता** कहते हैं । जैसे- रामः गच्छति । सूपकारः पचति । पत्र

ाति। वसन्तः आगच्छति । वर्षाः भवन्ति । मेघाः गर्जन्ति । कर्ता चेतन या अचेतन भी हो सकता । **'कर्तृवाच्य'** में कर्ता प्रथमा विभक्ति में रहता है और वचन की दृष्टि से क्रिया पर नियन्त्रण ख़ता है । **'कर्मवाच्य'** में कर्ता का क्रिया पर यह नियन्त्रण नहीं रहता । इसीलिए उसमें तृतीया ाभक्ति लगती है । जैसे- बालकेन चन्द्रः दृश्यते (लड़के के द्वारा चन्द्रमा को देखा जा रहा है।) हाँ बालक 'दृश्यते' क्रिया का कर्ता है किन्तु उसका नियन्त्रण 'दृश्यते' पर नहीं है । उसे कर्म ारक का शब्द 'चन्द्रः' अपने नियन्त्रण में रखे हुए है ।

र्म - **कर्तुरीप्सिततमं कर्म** । कर्ता कारक जिसे प्राप्त करना सबसे अधिक चाहता हो उस वस्तु ो **कर्म** कहते हैं । कर्ता अपनी क्रिया से ही उसे पाना चाहता है । जैसे- बालकः ओदनं खादति। ादन- क्रिया के द्वारा बालक (कर्ता) ओदन को प्राप्त करना चाहता है । इसीलिए ओदन कर्म । कर्तृवाच्य में कर्म कारक वाले शब्द से द्वितीया विभक्ति लगती है । कर्मवाच्य में क्रिया कर्म साक्षात् नियन्त्रित होती है । इसलिए कर्म में प्रथमा विभक्ति लगती है । बालकेन ओदनः ाद्यते, तेन फलानि खाद्यन्ते- इन वाक्यों में ओदन और फल कर्म हैं जो क्रिया के वचन को नयन्त्रित करते हैं।

रणम् - **साधकतमं करणम्** । क्रिया को पूर्ण करने में जो सर्वाधिक सहायक उपकरण हो, उस ूप में कहने की वक्ता की इच्छा (विवक्षा) हो, उसे करण कारक कहते हैं । जैसे- कलमेन लखति, अग्निना पचति, यानेन गच्छति । इन वाक्यों में कलम, अग्नि और यान को सम्बद्ध क्रयाओं का सर्वाधिक सहायक या उपकारक माना गया है । क्रिया के अनेक उपकारकों में जो श्रेष्ठ रूप में समझा गया हो वही करण होता है । इसीलिए करण को साधकतम कहा गया है । करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है ।

म्प्रदानम् - **कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्** । जब किसी वाक्य में कर्ता किसी कर्म के द्वारा किसी व्यक्ति (या वस्तु) को प्राप्त करता है उसे **सम्प्रदान कारक** कहते हैं । प्रायः इसमें दान क्रिया का प्रयोग होता है । देय वस्तु कर्म है । उससे किसी को प्रसन्न किया जाता है । प्रसन्न

होने वाला व्यक्ति सम्प्रदान है । जैसे- मोहनः मित्राय पुस्तकं ददाति । यहाँ **मित्र** सम्प्रदान क्योंकि पुस्तक (कर्म) से उसे प्रसन्न किया जा रहा है । शिक्षकः छात्रेभ्यः कथां कथयति । कथा (कर्म) से छात्रों को प्रसन्न किया जा रहा है । **छात्र** सम्प्रदान हैं। सम्प्रदान के अन्य अ सूत्र (लक्षण) भी हैं । जैसे-धारेरुत्तमर्णः, स्पृहेरीप्सितः इत्यादि । इन्हें हम आगे की कक्षाओं पढ़ेंगे । सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है ।

अपादानम्- ध्रुवमपायेऽपादानम् । जहाँ अपाय (विभाग) की बात हो वहाँ विभाग के **आरंभि बिन्दु** (ध्रुव Starting Point of Separation) को अपादान कारक कहते हैं । जैसे- वृक्षात् पतति । वृक्ष से पत्र का विभाजन हो रहा है । ग्रामात् आगच्छति - आने वाले व्यक्ति का ग्र से विभाजन हो रहा है । अतः वृक्ष और ग्राम अपादान हैं । अपादान के भी अन्य अनेक (लक्षण) हैं जो गौण अपादान का निर्देश करते हैं । जैसे- वारणार्थानामीप्सितः, जनिकर्तुः प्रकृ भुवः प्रभवश्च इत्यादि । इन्हें आगे चलकर पढ़ेंगे । अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है ।

अधिकरणम्- आधारोऽधिकरणम् । कर्ता या कर्म के आधार के रूप में जो क्रिया की पूर्णता सहायक होता है वह अधिकरण कारक है । जैसे- कटे (चटाई पर) छात्राः उपविशन्ति । यहाँ छ कर्ता हैं, उनका आधार (बैठने का स्थान) कट अर्थात् चटाई है । अतः कट अधिकरण है । क के आधार का उदाहरण है- घटे जलं पूरयति (घड़े में जल भरता है) यहाँ जल कर्म है उस आधार घट है । पात्रे ओदनं पचति- यहाँ पात्र ओदन का आधार है, ओदन कर्म है । अधिकर कारक में सप्तमी विभक्ति होती है ।

2. तिङन्त-पदानि

तिङन्त का अर्थ है - तिङ् + अन्त । अर्थात् धातु से जब तिङ् प्रत्यय जुड़े तो उसे तिङ कहते हैं । सुप् के समान तिङ् भी एक प्रत्याहार है जिसमें 18 प्रत्ययों का समाहरण होता है ये 18 प्रत्यय पहले दो भागों में विभक्त हैं- परस्मैपद (9 प्रत्यय) तथा आत्मनेपद (9 प्रत्यय) पुनः ये नौ प्रत्यय पुरुष और वचन के आधार पर रखे गये हैं । तिङ् प्रत्ययों की तालिका इस प्रक है -

परस्मैपद

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष: (Third Person)	तिप्	तस्	झि
मध्यमपुरुष: (Second Person)	सिप्	थस्	थ
उत्तमपुरुष: (First Person)	मिप्	वस्	मस्

आत्मनेपदम्

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष: (Third Person)	त	आताम्	झ
मध्यमपुरुष: (Second Person)	थास्	आथाम्	ध्वम्
उत्तमपुरुष: (First Person)	इट्	वहिङ्	महिङ्

तिप् के **ति** से आरम्भ करके महिङ् के ङ् तक आनेवाले प्रत्ययों को **तिङ्** प्रत्याहार में समाविष्ट किया जाता है । संस्कृत भाषा में प्राय: 2000 धातुओं की गणना की गयी है । कुछ धातुओं से केवल परस्मैपद प्रत्यय ही लगते हैं, कुछ से केवल आत्मनेपद और कुछ धातुओं से दोनों प्रकार के प्रत्यय लगते हैं । इस आधार पर धातुओं को परस्मैपदी, आत्मनेपदी तथा उभयपदी- इन तीन वर्गों में रखा जाता है । तिङन्तों की संख्या बहुत अधिक है । पुरुष, वचन और लकार के विस्तार में जब सभी धातुओं को सजाया जाता है तो संख्याओं का आधिक्य स्वाभाविक है ।

पुरुष:- तिङन्त रूपों को किसी न किसी पुरुष में देखा जाता है ।ये पुरुष अन्य भाषाओं में हैं । इनके द्वारा किसी भाषा की आरंभिक शिक्षा में सहायता मिलती है ।पुरुष तीन हैं- प्रथमपुरु (इसे दूसरी भाषाओं में अन्य पुरुष कहा जाता है), मध्यमपुरुष तथा उत्तमपुरुष । जिसके विष में कोई बात कही जाती है वह **प्रथमपुरुष** है । अस्मद्, युष्मद् को छोड़कर अन्य सभी शब्द प्रथ पुरुष के ही हैं । इसका निर्देश मुख्यत: तद् शब्द के द्वारा होता है - स:, तौ, ते; सा, ते, ता तत्, ते, तानि। इनके साथ प्रथमपुरुष के तिङ् प्रत्यय लगते हैं । जैसे- स: गच्छति, ते गच्छन्ति इत्यादि । जिससे कोई बात कही जा रही हो अर्थात् जो श्रोता हो वह मध्यमपुरुष है । इसका निर्दे युष्मद् शब्द के रूपों से होता है - त्वम्, युवाम्, यूयम् (You) । इन शब्दों के साथ **मध्यमपुरु** के तिङ् प्रत्यय लगते हैं । जैसे- त्वं गच्छसि, यूयं पठथ । वक्ता को **उत्तमपुरुष** कहा जाता है इसका निर्देश अस्मद् शब्द के रूपों से होता है- अहम्, आवाम्, वयम् । इनके प्रयोग में उत्तमपुरु के तिङ् प्रत्यय लगते हैं । जैसे- अहं पठामि, वयं आगच्छाम: ।

वचनम्- सुबन्त पदों के प्रसंग में कहा जा चुका है कि संख्या का निर्देश करने के लिए वचन क उपयोग होता है । यद्यपि संख्या मुख्यत: वस्तुवाचक पदों में ही होती है तथापि उन पदों क निर्दिष्ट करने के लिए तिङन्त पदों में भी वचन होता है । इसीलिए वचन के अनुसार तिङ् प्रत्यय में भेद होता है । कर्ता या कर्म का वचन तिङ् प्रत्यय में आ जाता है । बालका: पठन्ति में कर्त का बहुवचन क्रिया में चला गया है । मया **पुस्तकानि पठ्यन्ते** - यहाँ कर्म का बहुवचन क्रिय में आ गया है । विद्वानों ने कहा है कि क्रिया में वचन का प्रश्न सुबन्त पदों के कारण उठता है क्रिया तो एक सी ही होती है किन्तु उसे करनेवालों की संख्या क्रिया में भी आ जाती है इसीलिए तिङ् पद भी एकवचन, द्विवचन और बहुवचन होते हैं। जैसे- अहं लिखामि, आवा लिखाव:, वयं लिखाम:।

लकार:- संस्कृत भाषा में सभी धातुओं के रूप विभिन्न लकारों में पृथक्-पृथक् चलते हैं । ये लकार क्रिया के सम्पन्न होने के काल तथा दशा का बोध कराते हैं । इन्हें **लकार** इसलिए कहते

हैं कि सब में 'ल' का प्रयोग है । ये लकार हैं- लट्, लिट्, लुट्, लृट्, लेट्, लोट्, लङ्, लिङ् (विधि तथा आशी:), लुङ् तथा लृङ् । इसप्रकार सभी दसों लकारों में 'ल' का प्रयोग है । इन लकारों में लेट् केवल वैदिक भाषा में प्रयुक्त होता है । अन्य लकार संस्कृत में आते हैं किन्तु सामान्यतः सभी का प्रयोग लोकप्रिय नहीं है-।

लकारों के अर्थ- लट् वर्तमान काल का बोधक है । **लिट्, लङ् तथा लुङ्** - ये तीनों भूतकाल के बोधक हैं । **लोट् तथा लुट्** - ये दोनों भविष्यत् काल के लकार हैं । लोट् अनुज्ञा का बोधक है । **लिङ्लकार** विधान तथा आशीर्वाद का बोधक है । **लृङ्लकार** क्रियातिपत्ति (औपबंधिक कथन) का बोधक है । इनमें **लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् तथा लृट्** - ये पाँच बहुधा प्रयुक्त होते हैं इसीलिए पाठ्यक्रम में इनका महत्त्व है ।

यह कहा गया है कि लकार के आधार पर तिङन्त पदों के रूप बदल जाते हैं । तिङ् प्रत्यय के रूप विविध धातुओं और लकारों में बदलते हैं । उदाहरण के लिए पठ् धातु से तिप् प्रत्यय लगने पर लट्लकार में पठति, लिट्लकार में पपाठ, लुट्लकार में पठिता, लृट्लकार में पठिष्यति, लोट्लकार में पठतु, लङ्लकार में अपठत्, लिङ्लकार में पठेत्, लुङ्लकार में अपाठीत् तथा लृङ्लकार में अपठिष्यत् - ये रूप होते हैं । व्याकरण के उच्चतर ग्रन्थों में इन रूपों की प्रक्रिया समझायी गयी है ।

संस्कृत के धातुओं को दस वर्गों में (या गणों में) बाँटा गया है । इस विभाजन का कारण धातु और प्रत्यय के बीच लगने वाला एक अवान्तर प्रत्यय है जिसे 'विकरण' कहते हैं । उदाहरण देखें-

√पठ् + शप् (अ) + तिप् = पठति । (भ्वादिगणीय धातु)

√या + तिप् = याति । (अदादिगणीय धातु)

√हु + श्लु + तिप् = जुहोति । (जुहोत्यादिगणीय धातु)

√दा + श्लु + तिप् = ददाति । (जुहोत्यादिगणीय धातु)

√कुप् + श्यन् + तिप् = कुप्यति । (दिवादिगणीय धातु)

√श्रु + श्नु + तिप् = शृणोति । (स्वादिगणीय धातु)

√ग्रह् + श्ना + तिप् = गृह्णाति । (क्र्यादिगणीय धातु)

√कृ + उ + तिप् = करोति । (तनादिगणीय धातु)

√कथ् + णिच् + शप् + तिप् = कथयति । (चुरादिगणीय धातु)

इस प्रकार संस्कृत की धातुरूप - व्यवस्था एक विस्तृत तथा जटिल प्रक्रिया है जिसे सरल करने का प्रयास पालि, प्राकृत, अपभ्रंश तथा परवर्ती भाषाओं ने किया । फिर भी प्राचीन संस्कृत साहित्य को समझने के लिए इन क्रिया रूपों की व्यवस्था से अवगत होना बहुत लाभदायक है ।

3. अव्यय-पदानि

अव्यय ऐसे पदों को कहते हैं जिनका रूप स्थिर रहता है, उसमें परिवर्तन नहीं होता । इसलिए अव्यय को अविकारी (Indeclinable) शब्द कहते हैं । संस्कृत व्याकरण में इसका लक्षण दिया गया है -

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु ।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ॥

अर्थात् लिङ्ग, विभक्ति या वचन का प्रभाव जिस पर नहीं पड़ता, जो इनके कारण नहीं बदलता (न व्येति = न विकृतं भवति) वही अव्यय है । अव्यय से भिन्न पद अर्थात् सुबन्त और तिङन्त के रूप बदलते हैं, अव्यय के नहीं ।

अव्यय सर्वप्रथम दो प्रकार के हैं- अव्युत्पन्न तथा व्युत्पन्न । **अव्युत्पन्न अव्यय** वे हैं जिनका विभाजन (प्रकृति-प्रत्यय या समास के रूप में) नहीं होता । जैसे- च, वा, ह, सह, निकषा, अधः आदि । दूसरी ओर **व्युत्पन्न अव्यय** का विभाजन होता है । उसमें प्रत्यय लगा रहता है या समास रहता है ।

व्युत्पन्न अव्यय के तीन भेद हैं-

(1) **कृदन्त अव्यय** जैसे- कृत्वा, कर्तुम्, आगम्य, पाठं-पाठम् (पढ़-पढ़ कर) इत्यादि । इनमें कृत् प्रत्यय लगे हैं ।

(2) **तद्धितान्त अव्यय** जैसे- अत्र, कदा, सर्वथा, एकदा इत्यादि । इनमें तद्धित प्रत्यय लगे हुए हैं।

(3) **समासरूप अव्यय** जैसे- यथाशक्ति, प्रतिदिनम्, अहर्दिवम् इत्यादि । इन पदों में समास है।

कभी-कभी अनेक अव्यय एक साथ लगकर संस्कृत का मुहावरा बनाते हैं । जैसे- कथम् + अपि = कथमपि (किसी भी तरह), अद्य प्रभृति (आज से लेकर), यदा-कदा (जब-तब), अथ किम् (और क्या ?) इत्यादि । अव्ययों के प्रयोग से भाषा में सौन्दर्य आता है ।

अर्थ के आधार पर अव्ययों को निम्नलिखित वर्गों में रखा जाता है –

(क) **कालवाचक**- सर्वदा, निरन्तरम्, सम्प्रति, अधुना, इदानीम्, अद्य, ह्यः (बीता हुआ कल), श्वः (आने वाला कल), प्रातः, सायम्, नक्तम् (रात में), दिवा, चिरम्, कदा, यदा, तदा, सदा, ऐषमः (इस वर्ष) इत्यादि ।

(ख) **स्थानवाचक**- यत्र, तत्र, कुत्र, सर्वत्र, अत्र, अन्तः (भीतर) बहिः, अन्तरा, उच्चैः, नीचैः, अधः, निकषा, उपरि, अन्यत्र, ततः, पुरतः, पुरः, अग्रे, परितः इत्यादि ।

(ग) **प्रकारवाचक**- शनैः, पुनः, भूयः, मुहुः, मुहुर्मुहुः (बार-बार) यथा (जिस प्रकार), तथा (उस प्रकार), कथम् (किस प्रकार), इत्थम् (इस प्रकार), एवम् (ऐसा), सम्यक् (अच्छी तरह), सहसा, अकस्मात्, सकृत् (एक बार), कदाचित् (कभी, शायद) अजस्रम् (लगातार), सर्वथा (सब प्रकार से) इत्यादि ।

(घ) **परिमाणवाचक**- किञ्चित् (कुछ), ईषत् (थोड़ा), प्रकामम् (भरपूर), अलम् (पर्याप्त), भृशम् (बहुत अधिक), मनाक् (थोड़ा), कृतम् (बस) इत्यादि ।

(ङ) **प्रश्नवाचक**- कुतः (कहाँ से), कुत्र (कहाँ), कदा (कब), किम् (क्या), अथ किम् (और क्या), क्व (कहाँ), किमर्थम् (किसलिए) इत्यादि ।

मति (बुद्धि)
इकारान्त (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै / मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पञ्चमी	मत्याः / मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः / मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम् / मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधनम्	हे मते !	हे मती !	हे मतयः !

नोटः- बुद्धि (मति), मूर्ति (मूरत), भक्ति, स्मृति (याद), स्तुति (बड़ाई), श्रुति (वेद), कीर्ति (यश), कान्ति (शोभा), जाति, मुक्ति, रात्रि (रात), रीति (रिवाज) आकृति, रुचि (इच्छा), वृष्टि (वर्षा), सृष्टि (दुनिया) इत्यादि शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं ।

नदी (नदी)
ईकारान्त (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधनम्	हे नदि !	हे नद्यौ !	हे नद्यः !

नोट :- गौरी, पार्वती, काली, कुमारी, नारी, जननी, मैत्री, कौमुदी, राज्ञी, देवी, नलिनी इत्यादि शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं ।

वारि (जल)

इकारान्त (क्लीबलिङ्ग)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणी	वारिणि	वारिषु
सम्बोधनम्	हे वारे, हे वारि !	हे वारिणी !	हे वारीणि !

मधु (शहद)

उकारान्त (क्लीबलिङ्ग)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधनम्	हे मधो, हे मधु !	हे मधुनी !	हे मधूनि !

आत्मन् (आत्मा)

पुँल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वितीया	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
चतुर्थी	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पञ्चमी	आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
षष्ठी	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
सम्बोधनम्	हे आत्मन् !	हे आत्मानौ !	हे आत्मानः !

श्रीमत् (धनवान्, सुन्दर)

मतुप् प्रत्ययान्त पुँल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	श्रीमान्	श्रीमन्तौ	श्रीमन्तः
द्वितीया	श्रीमन्तम्	श्रीमन्तौ	श्रीमतः
तृतीया	श्रीमता	श्रीमद्भ्याम्	श्रीमद्भिः
चतुर्थी	श्रीमते	श्रीमद्भ्याम्	श्रीमद्भ्यः
पञ्चमी	श्रीमतः	श्रीमद्भ्याम्	श्रीमद्भ्यः
षष्ठी	श्रीमतः	श्रीमतोः	श्रीमताम्
सप्तमी	श्रीमति	श्रीमतोः	श्रीमत्सु
सम्बोधनम्	हे श्रीमन् !	हे श्रीमन्तौ !	हे श्रीमन्तः !

गुणिन् (गुणी मनुष्य)

इन् - प्रत्ययान्त (पुँल्लिङ्ग)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	गुणी	गुणिनौ	गुणिनः
द्वितीया	गुणिनम्	गुणिनौ	गुणिनः
तृतीया	गुणिना	गुणिभ्याम्	गुणिभिः
चतुर्थी	गुणिने	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
पञ्चमी	गुणिनः	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
षष्ठी	गुणिनः	गुणिनोः	गुणिनाम्
सप्तमी	गुणिनि	गुणिनोः	गुणिषु
सम्बोधनम्	हे गुणिन् !	हे गुणिनौ !	हे गुणिनः !

राजन् (राजा)

नकारान्त पुँल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचन
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पञ्चमी	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
षष्ठी	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि, राजनि	राज्ञोः	राजसु
सम्बोधनम्	हे राजन् !	हे राजानौ !	हे राजानः !

विद्वस् (विद्वान्, ज्ञाता)

सकारान्त पुँल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पञ्चमी	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
षष्ठी	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
सम्बोधनम्	हे विद्वन् !	हे विद्वांसौ !	हे विद्वांसः !

सर्व (सभी)

सर्वनाम (पुँल्लिङ्ग)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

सर्व (सभी) स्त्रीलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृतीया	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
षष्ठी	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

सर्व (सभी) नपुंसकलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

अस्मद् (मैं, हम)

पुरुषवाचक सर्वनाम

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः

तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

युष्मद् (तू, तुम, तुमलोग)

पुरुषवाचक सर्वनाम

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

तद् (वह) पुंल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

तत् (वह) स्त्रीलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

तत् (वह) नपुंसकलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

इदम् (यह) पुंल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्	इमौ	इमान्
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः	एषु

इदम् (यह) स्त्रीलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्	इमे	इमाः
तृतीया	अनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पञ्चमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः	आसु

इदम् (यह) नपुंसकलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्	इमे	इमानि
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः	एषु

एतत् (यह) पुंल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	एषः	एतौ	एते
द्वितीया	एतम्	एतौ	एतान्
तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पञ्चमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु

एतत् (यह) स्त्रीलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एताम्	एते	एताः
तृतीया	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पञ्चमी	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
षष्ठी	एतस्याः	एतयोः	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयोः	एतासु

एतत् (यह) नपुंसकलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	एतत्	एते	एतानि
द्वितीया	एतत्	एते	एतानि
तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पञ्चमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु

किम् (कौन) पुँल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्

तृतीया	केन	काभ्याम्	[illegible]
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

किम् (कौन) स्त्रीलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	का	के	
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पञ्चमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

किम् (कौन) नपुंसकलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

*****

धातु - रूपाणि

पठ् - पढ़ना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यमपुरुषः	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तमपुरुषः	पठामि	पठावः	पठामः

लृट्लकारः (सामान्य भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तमपुरुषः	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

लङ्लकारः (अनद्यतन भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यमपुरुषः	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तमपुरुषः	अपठम्	अपठाव	अपठाम

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यमपुरुषः	पठ	पठतम्	पठत
उत्तमपुरुषः	पठानि	पठाव	पठाम

विधिलिङ्लकार: (चाहिए अर्थ में)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	पठेत्	पठेताम्	पठेयु:
मध्यमपुरुष:	पठे:	पठेतम्	पठेत
उत्तमपुरुष:	पठेयम्	पठेव	पठेम

ध्यातव्य- पट् धातु के समान ही निम्नलिखित धातुओं के रूप चलते हैं-
चल्, खेल्, धाव्, पत्, क्रीड्, जप्

गम्-गच्छ् = जाना (परस्मैपदी)

लट्लकार: (वर्तमानकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	गच्छति	गच्छत:	गच्छन्ति
मध्यमपुरुष:	गच्छसि	गच्छत:	गच्छथ
उत्तमपुरुष:	गच्छामि	गच्छाव:	गच्छाम:

लृट्लकार: (भविष्यत्काल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	गमिष्यति	गमिष्यत:	गमिष्यन्ति
मध्यमपुरुष:	गमिष्यसि	गमिष्यथ:	गमिष्यथ
उत्तमपुरुष:	गमिष्यामि	गमिष्याव:	गमिष्याम:

लङ्लकार: (भूतकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यमपुरुष:	अगच्छ:	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तमपुरुष:	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यमपुरुषः	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उत्तमपुरुषः	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

विधिलिङ्लकारः (चाहिए - अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
मध्यमपुरुषः	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उत्तमपुरुषः	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

भू = होना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यमपुरुषः	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तमपुरुषः	भवामि	भवावः	भवामः

लृट्लकारः (भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तमपुरुषः	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लङ्लकार: (भूतकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यमपुरुष:	अभव:	अभवतम्	अभवत
उत्तमपुरुष:	अभवम्	अभवाव	अभवाम

लोट्लकार: (आदेशवाचक)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	भवतु	भवताम्	भवन्तु
मध्यमपुरुष:	भव	भवतम्	भवत
उत्तमपुरुष:	भवानि	भवाव	भवाम

विधिलिङ् लकार: (चाहिए-अर्थ में)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	भवेत्	भवेताम्	भवेयु:
मध्यमपुरुष:	भवे:	भवेतम्	भवेत
उत्तमपुरुष:	भवेयम्	भवेव	भवेम

स्था = ठहरना (परस्मैपदी)

लट्लकार: (वर्तमानकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	तिष्ठति	तिष्ठत:	तिष्ठन्ति
मध्यमपुरुष:	तिष्ठसि	तिष्ठथ:	तिष्ठथ
उत्तमपुरुष:	तिष्ठामि	तिष्ठाव:	तिष्ठाम:

लृट्लकार: (भविष्यत्काल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	स्थास्यति	स्थास्यत:	स्थास्यन्ति
मध्यमपुरुष:	स्थास्यसि	स्थास्यथ:	स्थास्यथ
उत्तमपुरुष:	स्थास्यामि	स्थास्याव:	स्थास्याम्

लङ्लकार: (भूतकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
मध्यमपुरुष:	अतिष्ठ:	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उत्तमपुरुष:	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

लोट्लकार: (आदेशवाचक)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
मध्यमपुरुष:	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उत्तमपुरुष:	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

विधिलिङ्लकार: (चाहिए-अर्थ में)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयु:
मध्यमपुरुष:	तिष्ठे:	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
उत्तमपुरुष:	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

लिख् - लिखना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	लिखति	लिखतः	लिखन्ति
मध्यमपुरुषः	लिखसि	लिखथः	लिखथ
उत्तमपुरुषः	लिखामि	लिखावः	लिखामः

लृट्लकारः (भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	लेखिष्यति	लेखिष्यतः	लेखिष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	लेखिष्यसि	लेखिष्यथः	लेखिष्यथ
उत्तमपुरुषः	लेखिष्यामि	लेखिष्यावः	लेखिष्यामः

लङ्लकारः (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्
मध्यमपुरुषः	अलिखः	अलिखतम्	अलिखत
उत्तमपुरुषः	अलिखम्	अलिखाव	अलिखाम

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	लिखतु	लिखताम्	लिखन्तु
मध्यमपुरुषः	लिख	लिखतम्	लिखत
उत्तमपुरुषः	लिखानि	लिखाव	लिखाम

विधिलिङ्लकारः (चाहिए - अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	लिखेत्	लिखेताम्	लिखेयुः
मध्यमपुरुषः	लिखेः	लिखेतम्	लिखेत
उत्तमपुरुषः	लिखेयम्	लिखेव	लिखेम

'वद्' - बोलना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	वदति	वदतः	वदन्ति
मध्यमपुरुषः	वदसि	वदथः	वदथ
उत्तमपुरुषः	वदामि	वदावः	वदामः

लृट्लकारः (भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	वदिष्यति	वदिष्यतः	वदिष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	वदिष्यसि	वदिष्यथः	वदिष्यथ
उत्तमपुरुषः	वदिष्यामि	वदिष्यावः	वदिष्यामः

लङ्लकारः (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अवदत्	अवदताम्	अवदन्
मध्यमपुरुषः	अवदः	अवदतम्	अवदत
उत्तमपुरुषः	अवदम्	अवदाव	अवदाम

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	वदतु	वदताम्	वदन्तु
मध्यमपुरुषः	वद	वदतम्	वदत
उत्तमपुरुषः	वदानि	वदाव	वदाम

विधिलिङ्लकारः (चाहिए - अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	वदेत्	वदेताम्	वदेयुः
मध्यमपुरुषः	वदेः	वदेतम्	वदेत
उत्तमपुरुषः	वदेयम्	वदेव	वदेम

'रक्ष्' - रक्षा करना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	रक्षति	रक्षतः	रक्षन्ति
मध्यमपुरुषः	रक्षसि	रक्षथः	रक्षथ
उत्तमपुरुषः	रक्षामि	रक्षावः	रक्षामः

लृट्लकारः (भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	रक्षिष्यति	रक्षिष्यतः	रक्षिष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	रक्षिष्यसि	रक्षिष्यथः	रक्षिष्यथ
उत्तमपुरुषः	रक्षिष्यामि	रक्षिष्यावः	रक्षिष्यामः

लङ्लकारः (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अरक्षत्	अरक्षताम्	अरक्षन्
मध्यमपुरुषः	अरक्षः	अरक्षतम्	अरक्षत
उत्तमपुरुषः	अरक्षम्	अरक्षाव	अरक्षाम

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	रक्षतु	रक्षताम्	रक्षन्तु
मध्यमपुरुषः	रक्ष	रक्षतम्	रक्षत
उत्तमपुरुषः	रक्षाणि	रक्षाव	रक्षाम

विधिलिङ्लकारः (चाहिए - अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	रक्षेत्	रक्षेताम्	रक्षेयुः
मध्यमपुरुषः	रक्षेः	रक्षेतम्	रक्षेत
उत्तमपुरुषः	रक्षेयम्	रक्षेव	रक्षेम

'नी' - ले जाना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	नयति	नयतः	नयन्ति
मध्यमपुरुषः	नयसि	नयथः	नयथ
उत्तमपुरुषः	नयामि	नयावः	नयामः

लृट्लकार: (भविष्यत्काल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	नेष्यति	नेष्यत.	नेष्यन्ति
मध्यमपुरुष:	नेष्यसि	नेष्यथ:	नेष्यथ
उत्तमपुरुष:	नेष्यामि	नेष्याव:	नेष्याम:

लङ्लकार: (भूतकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	अनयत्	अनयताम्	अनयन्
मध्यमपुरुष:	अनय:	अनयतम्	अनयत
उत्तमपुरुष:	अनयम्	अनयाव	अनयाम

लोट्लकार: (आदेशवाचक)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	नयतु	नयताम्	नयन्तु
मध्यमपुरुष:	नय	नयतम्	नयत
उत्तमपुरुष:	नयानि	नयाव	नयाम

विधिलिङ्लकार: (चाहिए - अर्थ में)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	नयेत्	नयेताम्	नयेयु:
मध्यमपुरुष:	नये:	नयेतम्	नयेत
उत्तमपुरुष:	नयेयम्	नयेव	नयेम

'पच्' - पकाना (परस्मैपदी)

लट्लकार: (वर्तमानकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	पचति	पचत:	पचन्ति
मध्यमपुरुष:	पचसि	पचथ:	पचथ
उत्तमपुरुष:	पचामि	पचाव:	पचाम:

लृट्लकार: (भविष्यत्काल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	पक्ष्यति	पक्ष्यत:	पक्ष्यन्ति
मध्यमपुरुष:	पक्ष्यसि	पक्ष्यथ:	पक्ष्यथ
उत्तमपुरुष:	पक्ष्यामि	पक्ष्याव:	पक्ष्याम:

लङ्लकार: (भूतकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
मध्यमपुरुष:	अपच:	अपचतम्	अपचत
उत्तमपुरुष:	अपचम्	अपचाव	अपचाम

लोट्लकार: (आदेशवाचक)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	पचतु	पचताम्	पचन्तु
मध्यमपुरुष:	पच	पचतम्	पचत
उत्तमपुरुष:	पचानि	पचाव	पचाम

विधिलिङ्लकारः (चाहिए - अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पचेत्	पचेताम्	पचेयुः
मध्यमपुरुषः	पचेः	पचेतम्	पचेत
उत्तमपुरुषः	पचेयम्	पचेव	पचेम

'वस्' - रहना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	वसति	वसतः	वसन्ति
मध्यमपुरुषः	वससि	वसथः	वसथ
उत्तमपुरुषः	वसामि	वसावः	वसामः

लृट्लकारः (भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	वत्स्यति	वत्स्यतः	वत्स्यन्ति
मध्यमपुरुषः	वत्स्यसि	वत्स्यथः	वत्स्यथ
उत्तमपुरुषः	वत्स्यामि	वत्स्यावः	वत्स्यामः

लङ्लकारः (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अवसत्	अवसताम्	अवसन्
मध्यमपुरुषः	अवसः	अवसतम्	अवसत
उत्तमपुरुषः	अवसम्	अवसाव	अवसाम

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	वसतु	वसताम्	वसन्तु
मध्यमपुरुषः	वस	वसतम्	वसत
उत्तमपुरुषः	वसानि	वसाव	वसाम

विधिलिङ्लकारः (चाहिए - अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	वसेत्	वसेताम्	वसेयुः
मध्यमपुरुषः	वसेः	वसेतम्	वसेत
उत्तमपुरुषः	वसेयम्	वसेव	वसेम

'लभ्' - पाना (आत्मनेपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	लभते	लभेते	लभन्ते
मध्यमपुरुषः	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उत्तमपुरुषः	लभे	लभावहे	लभामहे

लृट्लकारः (भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
मध्यमपुरुषः	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उत्तमपुरुषः	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

लङ्लकारः (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
मध्यमपुरुषः	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उत्तमपुरुषः	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
मध्यमपुरुषः	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उत्तमपुरुषः	लभै	लभावहै	लभामहै

विधिलिङ्लकारः (चाहिए - अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
मध्यमपुरुषः	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उत्तमपुरुषः	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

वन्द् - नमस्कार करना (आत्मनेपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	वन्दते	वन्देते	वन्दन्ते
मध्यमपुरुषः	वन्दसे	वन्देथे	वन्दध्वे
उत्तमपुरुषः	वन्दे	वन्दावहे	वन्दामहे

लृट्लकारः (भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	वन्दिष्यते	वन्दिष्येते	वन्दिष्यन्ते
मध्यमपुरुषः	वन्दिष्यसे	वन्दिष्येथे	वन्दिष्यध्वे
उत्तमपुरुषः	वन्दिष्ये	वन्दिष्यावहे	वन्दिष्यामहे

लङ्लकारः (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अवन्दत	अवन्देताम्	अवन्दन्त
मध्यमपुरुषः	अवन्दथाः	अवन्देथाम्	अवन्दध्वम्
उत्तमपुरुषः	अवन्दे	अवन्दावहि	अवन्दामहि

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	वन्दताम्	वन्देताम्	वन्दन्ताम्
मध्यमपुरुषः	वन्दस्व	वन्देथाम्	वन्दध्वम्
उत्तमपुरुषः	वन्दे	वन्दावहै	वन्दामहै

विधिलिङ्लकारः (चाहिए - अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	वन्देत	वन्देयाताम्	वन्देरन्
मध्यमपुरुषः	वन्देथाः	वन्देयाथाम्	वन्देध्वम्
उत्तमपुरुषः	वन्देय	वन्देवहि	वन्देमहि

सह् - सहन करना (आत्मनेपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	सहते	सहेते	सहन्ते
मध्यमपुरुषः	सहसे	सहेथे	सहध्वे
उत्तमपुरुषः	सहे	सहावहे	सहामहे

लृट्लकारः (भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	सहिष्यते	सहिष्येते	सहिष्यन्ते
मध्यमपुरुषः	सहिष्यसे	सहिष्येथे	सहिष्यध्वे
उत्तमपुरुषः	सहिष्ये	सहिष्यावहे	सहिष्यामहे

लङ्लकारः (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	असहत	असहेताम्	असहन्त
मध्यमपुरुषः	असहथाः	असहेथाम्	असहध्वम्
उत्तमपुरुषः	असहे	असहावहि	असहामहि

लोट्लकार (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	सहताम्	सहेताम्	सहन्ताम्
मध्यमपुरुषः	सहस्व	सहेथाम्	सहध्वम्
उत्तमपुरुष	सहै	सहावहै	सहामहै

विधिलिङ्लकारः (चाहिए - अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	सहेत	सहेयाताम्	सहेरन्
मध्यमपुरुषः	सहेथाः	सहेयाथाम्	सहेध्वम्
उत्तमपुरुषः	सहेय	सहेवहि	सहेमहि

वृत् - होना (आत्मनेपदी)

लट्लकारः (वर्तमान काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	वर्तते	वर्तेते	वर्तन्ते
मध्यमपुरुषः	वर्तसे	वर्तेथे	वर्तध्वे
उत्तमपुरुषः	वर्ते	वर्तावहे	वर्तामहे

लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	वर्तिष्यते	वर्तिष्येते	वर्तिष्यन्ते
मध्यमपुरुषः	वर्तिष्यसे	वर्तिष्येथे	वर्तिष्यध्वे
उत्तमपुरुषः	वर्तिष्ये	वर्तिष्यावहे	वर्तिष्यामहे

लङ्लकारः (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अवर्तत	अवर्तेताम्	अवर्तन्त
मध्यमपुरुषः	अवर्तथाः	अवर्तेथाम्	अवर्तध्वम्
उत्तमपुरुषः	अवर्ते	अवर्तावहि	अवर्तामहि

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	वर्तताम्	वर्तेताम्	वर्तन्ताम्
मध्यमपुरुषः	वर्तस्व	वर्तेयाम्	वर्तध्वम्
उत्तमपुरुषः	वर्तै	वर्तावहै	वर्तामहै

विधिलिङ्लकार (चाहिए - अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	वर्तेत	वर्तेयाताम्	वर्तेरन्
मध्यमपुरुषः	वर्तेथाः	वर्तेयाथाम्	वर्तेध्वम्
उत्तमपुरुषः	वर्तेय	वर्तेवहि	वर्तेमहि

जन् - पैदा होना (आत्मनेपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	जायते	जायेते	जायन्ते
मध्यमपुरुषः	जायसे	जायेथे	जायध्वे
उत्तमपुरुषः	जाये	जायावहे	जायामहे

लृट्लकारः (भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
मध्यमपुरुषः	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे
उत्तमपुरुषः	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे

लङ्लकारः (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
मध्यमपुरुषः	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्
उत्तमपुरुषः	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
मध्यमपुरुषः	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
उत्तमपुरुषः	जायै	जायावहै	जायामहै

विधिलिङ्लकारः (चाहिए - अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्
मध्यमपुरुषः	जायेथाः	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
उत्तमपुरुषः	जायेय	जायेवहि	जायेमहि

अस् - होना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमान काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अस्ति	स्तः	सन्ति
मध्यमपुरुषः	असि	स्थः	स्थ
उत्तमपुरुषः	अस्मि	स्वः	स्मः

लृट्लकार: (भविष्यत् काल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	भविष्यति	भविष्यत:	भविष्यन्ति
मध्यमपुरुष:	भविष्यसि	भविष्यथ:	भविष्यथ
उत्तमपुरुष:	भविष्यामि	भविष्याव:	भविष्याम:

लङ्लकार: (भूतकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
मध्यमपुरुष:	आसी:	आस्तम्	आस्त
उत्तमपुरुष:	आसम्	आस्व	आस्म

लोट्लकार: (आदेशवाचक)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
मध्यमपुरुष:	एधि	स्तम्	स्त
उत्तमपुरुष:	असानि	असाव	असाम

विधिलिङ्लकार: (चाहिए - अर्थ में)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	स्यात्	स्याताम्	स्यु:
मध्यमपुरुष:	स्या:	स्यातम्	स्यात
उत्तमपुरुष:	स्याम्	स्याव	स्याम

कृ - करना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
मध्यमपुरुषः	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उत्तमपुरुषः	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लृट्लकारः (भविष्यत् काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उत्तमपुरुषः	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

लङ्लकारः (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यमपुरुषः	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तमपुरुषः	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
मध्यमपुरुषः	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उत्तमपुरुषः	करवाणि	करवाव	करवाम

विधिलिङ्लकारः (चाहिए - अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
मध्यमपुरुषः	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उत्तमपुरुषः	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

दा - देना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्त्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	ददाति	दत्तः	ददति
मध्यमपुरुषः	ददासि	दत्थः	दत्थ
उत्तमपुरुषः	ददामि	दद्वः	दद्मः

लृट्लकारः (भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
मध्यमपुरुषः	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उत्तमपुरुषः	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

लङ्लकारः (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
मध्यमपुरुषः	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उत्तमपुरुषः	अददाम्	अदद्व	अदद्म

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	ददातु	दत्ताम्	ददतु
मध्यमपुरुषः	देहि	दत्तम्	दत्त
उत्तमपुरुषः	ददानि	ददाव	ददाम

विधिलिङ्लकारः (चाहिए - अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
मध्यमपुरुषः	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
उत्तमपुरुषः	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

नश् - नष्ट होना, खो जाना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति
मध्यमपुरुषः	नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ
उत्तमपुरुषः	नश्यामि	नश्यावः	नश्यामः

लृट्लकारः (भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	नशिष्यति	नशिष्यतः	नशिष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	नशिष्यसि	नशिष्यथः	नशिष्यथ
उत्तमपुरुषः	नशिष्यामि	नशिष्यावः	नशिष्यामः

लङ्लकार: (भूतकाल)

ुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
थमपुरुष:	अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्
ध्यमपुरुष:	अनश्य:	अनश्यतम्	अनश्यत
तमपुरुष:	अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम

लोट्लकार: (आदेशवाचक)

ुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
थमपुरुष:	नश्यतु	नश्यताम्	नश्यन्तु
ध्यमपुरुष:	नश्य	नश्यतम्	नश्यत
तमपुरुष:	नश्यानि	नश्याव	नश्याम

विधिलिङ्लकार: (चाहिए - अर्थ में)

ुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
थमपुरुष:	नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयु:
ध्यमपुरुष:	नश्ये:	नश्येतम्	नश्येत
तमपुरुष:	नश्येयम्	नश्येव	नश्येम

बुध् - जानना (आत्मनेपदी)

लट्लकार: (वर्तमान काल)

रुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
थमपुरुष:	बुध्यते	बुध्येते	बुध्यन्ते
ध्यमपुरुष:	बुध्यसे	बुध्येथे	बुध्यध्वे
तमपुरुष:	बुध्ये	बुध्यावहे	बुध्यामहे

लृट्लकारः (भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	भोत्स्यते	भोत्स्येते	भोत्स्यन्ते
मध्यमपुरुषः	भोत्स्यसे	भोत्स्येथे	भोत्स्यध्वे
उत्तमपुरुषः	भोत्स्ये	भोत्स्यावहे	भोत्स्यामहे

लङ्लकारः (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अबुध्यत	अबुध्येताम्	अबुध्यन्त
मध्यमपुरुषः	अबुध्यथाः	अबुध्येथाम्	अबुध्यध्वम्
उत्तमपुरुषः	अबुध्ये	अबुध्यावहि	अबुध्यामहि

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	बुध्यताम्	बुध्येताम्	बुध्यन्ताम्
मध्यमपुरुषः	बुध्यस्व	बुध्येथाम्	बुध्यध्वम्
उत्तमपुरुषः	बुध्यै	बुध्यावहै	बुध्यामहै

विधिलिङ्लकारः (चाहिए - अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	बुध्येत	बुध्येयाताम्	बुध्येरन्
मध्यमपुरुषः	बुध्येथाः	बुध्येयाथाम्	बुध्येध्वम्
उत्तमपुरुषः	बुध्येय	बुध्येवहि	बुध्येमहि

मन् - समझना (आत्मनेपदी)

लट्लकार: (वर्तमानकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	मन्यते	मन्येते	मन्यन्ते
मध्यमपुरुष:	मन्यसे	मन्येथे	मन्यध्वे
उत्तमपुरुष:	मन्ये	मन्यावहे	मन्यामहे

लृट्लकार: (भविष्यत्काल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	मंस्यते	मंस्येते	मंस्यन्ते
मध्यमपुरुष:	मंस्यसे	मंस्येथे	मंस्यध्वे
उत्तमपुरुष:	मंस्ये	मंस्यावहे	मंस्यामहे

लङ्लकार: (भूतकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	अमन्यत	अमन्येताम्	अमन्यन्त
मध्यमपुरुष:	अमन्यथा:	अमन्येथाम्	अमन्यध्वम्
उत्तमपुरुष:	अमन्ये	अमन्यावहि	अमन्यामहि

लोट्लकार: (आदेशवाचक)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	मन्यताम्	मन्येताम्	मन्यन्ताम्
मध्यमपुरुष:	मन्यस्व	मन्येथाम्	मन्यध्वम्
उत्तमपुरुष:	मन्यै	मन्यावहै	मन्यामहै

विधिलिङ्लकारः (चाहिए - अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	मन्येत	मन्येयाताम्	मन्येरन्
मध्यमपुरुषः	मन्येथाः	मन्येयाथाम्	मन्येध्वम्
उत्तमपुरुषः	मन्येय	मन्येवहि	मन्येमहि

'ज्ञा' - जानना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	जानाति	जानीतः	जानन्ति
मध्यमपुरुषः	जानासि	जानीथः	जानीथ
उत्तमपुरुषः	जानामि	जानीवः	जानीमः

लृट्लकारः (भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	ज्ञास्यति	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यन्ति
मध्यमपुरुषः	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यथ
उत्तमपुरुषः	ज्ञास्यामि	ज्ञास्यावः	ज्ञास्यामः

लङ्लकारः (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अजानात्	अजानीताम्	अजानन्
मध्यमपुरुषः	अजानाः	अजानीतम्	अजानीत
उत्तमपुरुषः	अजानाम्	अजानीव	अजानीम

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	जानातु	जानीताम्	जानन्तु
मध्यमपुरुषः	जानीहि	जानीतम्	जानीत
उत्तमपुरुषः	जानानि	जानीव	जानीम

विधिलिङ्लकारः (चाहिए - अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयुः
मध्यमपुरुषः	जानीयाः	जानीयातम्	जानीयात
उत्तमपुरुषः	जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम

'ग्रह्' - लेना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति
मध्यमपुरुषः	गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ
उत्तमपुरुषः	गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः

लृट्लकारः (भविष्यत्काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यथः	ग्रहीष्यथ
उत्तमपुरुषः	ग्रहीष्यामि	ग्रहीष्यावः	ग्रहीष्यामः

लङ्लकारः (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णीन्
मध्यमपुरुषः	अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
उत्तमपुरुषः	अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम

लोट्लकारः (आदेशवाचक)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	गृह्णातु	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु
मध्यमपुरुषः	गृहाण	गृह्णीतम्	गृह्णीत
उत्तमपुरुषः	गृह्णानि	गृह्णीव	गृह्णीम

विधिलिङ्लकारः (चाहिए - अर्थ में)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः
मध्यमपुरुषः	गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात
उत्तमपुरुषः	गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम

कथ् - कहना (परस्मैपदी)

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	कथयति	कथयतः	कथयन्ति
मध्यमपुरुषः	कथयसि	कथयथः	कथयथ
उत्तमपुरुषः	कथयामि	कथयावः	कथयामः

लृट्लकार: (भविष्यत्काल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	कथयिष्यति	कथयिष्यत:	कथयिष्यन्ति
मध्यमपुरुष:	कथयिष्यसि	कथयिष्यथ:	कथयिष्यथ
उत्तमपुरुष:	कथयिष्यामि	कथयिष्याव:	कथयिष्याम:

लङ्लकार: (भूतकाल)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्
मध्यमपुरुष:	अकथय:	अकथयतम्	अकथयत
उत्तमपुरुष:	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम

लोट्लकार: (आदेशवाचक)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु
मध्यमपुरुष:	कथय	कथयतम्	कथयत
उत्तमपुरुष:	कथयानि	कथयाव	कथयाम

विधिलिङ्लकार: (चाहिए - अर्थ में)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	कथयेत्	कथयेताम्	कथयेयु:
मध्यमपुरुष:	कथये:	कथयेतम्	कथयेत
उत्तमपुरुष:	कथयेयम्	कथयेव	कथयेम

अनमोल जीवन दांव पर मत लगाइए
मानव रहित रेलवे समपार फाटक पार करने से पहले
रुकिए
देखिए
सुनिए
जाइए

मानवरहित रेलवे समपार पर
लापरवाही जानलेवा हो सकती है।
• अपना वाहन समपार से 20 मीटर पहले रोकदें.
• आनेवाली रेल की आवाज/हॉर्न ध्यान पूर्वक सुनें.
• दाई व बाई ओर ध्यान से देखें.
• पूर्ण रूप से सुनिश्चित होने के बाद ही वाहन पार करें.
याद रहे आपकी जिन्दगी अमूल्य है

वन्दे मातरम्

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्य-श्यामलां मातरम्।
वन्दे मातरम्॥
शुभ्र-ज्योत्स्ना-पुलकित-यामिनीम्
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्
सुहासिनीं, सुमधुरभाषिणीम्
सुखदां, वरदां, मातरम्।
वन्दे मातरम्॥

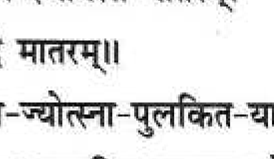

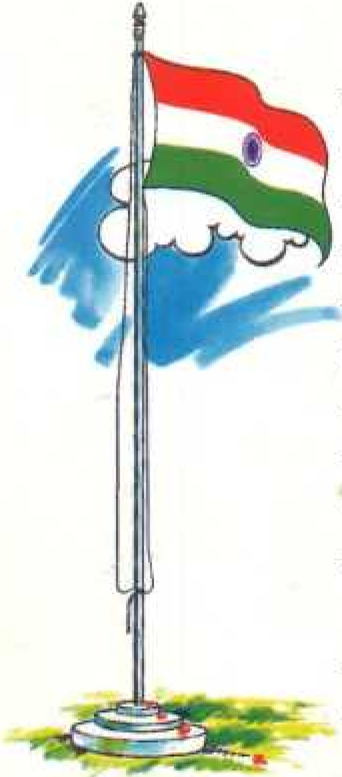

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
पंजाब सिंध गुजरात मराठा,
द्राविड़ - उत्कल - बंग।
विंध्य - हिमाचल - यमुना-गंगा,
उच्छल - जलधि - तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

सत्र 2019-20
अमृता, भाग-2, कक्षा-7, (संस्कृत)
बिहार स्टेट टेक्स्ट बुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना